

## वैदिक युग में पाइथागोरस ज्यामिति

### प्रलिस के लयः

भारतीय प्राचीन इतहास, वैदिक युग, वेद प्रणाली

### मेन्स के लयः

वेद प्रणाली का महत्त्व, वैदिक युग का महत्त्व

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में कर्नाटक सरकार द्वारा [राष्ट्रीय शकषा नीति \(NEP\), 2020](#) पर एक 'स्थतिपत्र' (Position Paper) में पाइथागोरस प्रमेय को "फर्जी समाचार" के रूप में वर्णन कया गया है।

- इसने बौधायन सुलबसूत्र नामक पाठ का उल्लेख कया है, जसमें वशिष्ट श्लोक प्रमेय को संदर्भत करता है।

## पाइथागोरसः

### परचयः

- साक्ष्य के आधार पर यूनानी दार्शनक की मौजूदगी लगभग 570-490 ईसा पूर्व में मानी जाती है।
- माना जाता है क उनके चारों ओर रहस्यमयी तत्त्व मौजूद थे क्योक उन्होंने इटली में रहस्यात्मक या गुप्त प्रकृति के स्कूल/समाज की स्थापना की।
- उनकी गणतीय उपलब्धियों के बारे में अपेक्षाकृत कम जानकारी है, क्योक वर्तमान में उनके लेखन के बारे में कुछ भी उपलब्ध नहीं है।

### पाइथागोरस प्रमेयः

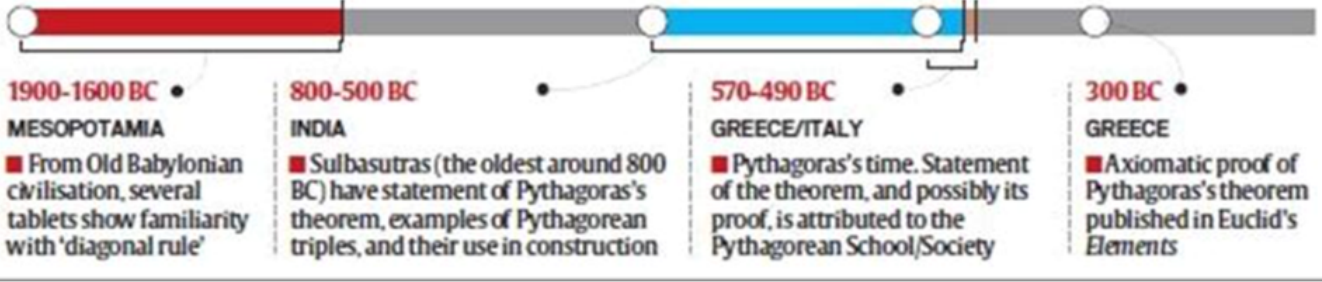
- पाइथागोरस प्रमेय एक समकोण त्रिभुज की तीन भुजाओं को जोड़ने वाले संबंध का वर्णन करता है (जसमें एक कोण  $90^\circ$  का होता है)।
- $a^2 + b^2 = c^2$
- यदएक समकोण त्रिभुज की कोई दो भुजाएँ ज्ञात हैं, तो प्रमेय आपको तीसरी भुजा की गणना करने में मदद करता है।

## वैदिक भारतीय गणतिज्ञ के स्रोतः

- सुलबसूत्रों में पाइथागोरस के संदर्भ बताया गया है, जो वैदिक भारतीयों द्वारा कयि गए अग्नानुष्ठानों (यजनों) से संबंधित ग्रंथ हैं।
  - इनमें से सबसे पुराना बौधायन सुलबसूत्र है।
- बौधायन सुलबसूत्र का काल अनश्चित है। इसका अनुमान भाषायी और अन्य दूसरे ऐतहासिक वचारों के आधार पर लगाया गया है।
  - वर्तमान साहित्य में बौधायन सुलबसूत्र का काल लगभग 800 ईसा पूर्व माना जाता है।
- बौधायन सुलबसूत्र में एक तथ्य है जसि पाइथागोरस प्रमेय कहा जाता है (इसे एक ज्यामतीय तथ्य के रूप में जाना जाता था, न क 'प्रमेय' के रूप में)।
- यज्ञ अनुष्ठानों में वभिन्न आकारों में अनुष्ठानों और अग्नविदियों का निर्माण शामिल था जैसे क समद्विबाहु त्रिभुज, सममति ट्रेपेज़िया और आयत।
  - सुलबसूत्र इन वेदियों के निर्धारण आकार के निर्माण की दशा में उठाए गए कदमों का वर्णन करते हैं।

## समीकरण का ज्ञानः

## DOWN THE CENTURIES: HISTORY OF PYTHAGORAS'S THEOREM



- प्राचीनतम प्रमाण पुरानी बेबीलोनियन सभ्यता (1900-1600 ईसा पूर्व) के हैं।
  - उन्होंने इसे वकिरण नियम के रूप में संदर्भित किया।
- इस संबंध में सबसे पहला प्रमाण शुलबसूत्रों के बाद के काल में मिलता है।
- प्रमेय का सबसे पुराना स्वयंसिद्ध प्रमाण लगभग 300 ईसा पूर्व के यूक्लिड के तत्त्वों में नहिती है।

## वेद

- वेद शब्द ज्ञान का प्रतीक है और यह ग्रंथ वास्तव में मानव जातिको पृथ्वी पर और उसके बाहर अपने पूरे जीवन का संचालन करने के लिये ज्ञान प्रदान करने के बारे में हैं।
- चार प्रमुख वेद हैं:
  - ऋग्वेद:
    - यह चारों में सबसे पुराना वदियमान वेद है।
    - इसमें सांसारिक समृद्धि और प्राकृतिक सुंदरता पर ध्यान दिया गया है।
    - वेद 10 पुस्तकों में व्यवस्थित है जिन्हें मंडल के नाम से जाना जाता है।
    - ऋग्वेद में वर्णित प्रमुख देवता:
      - भगवान इंद्र, अग्नि, वरुण, रुद्र, आदित्य आदि।
  - यजुर्वेद:
    - यजु नाम त्याग का प्रतीक है।
    - यह विभिन्न प्रकार के यज्ञों के संस्कारों और मंत्रों पर केंद्रित है।
    - इसके दो प्रमुख संशोधन (संहिताएँ) हैं:
      - शुक्ल यजुर्वेद जिसे वाजसनेयी संहिता भी कहा जाता है।
      - कृष्ण यजुर्वेद जिसे तैत्तिरीय संहिता भी कहा जाता है।
  - सामवेद:
    - इसका नाम समन (गान) के नाम पर रखा गया है।
    - यह गीत-संगीत प्रधान है।
    - इसे मंत्रों की पुस्तक भी कहा जाता है।
  - अथर्ववेद:
    - इसे ब्रह्मवेद के रूप में भी जाना जाता है
    - इसकी रचना 'अथर्वन' तथा 'आंगरिस' ऋषियों द्वारा की गई है। इसीलिये इसे 'अथर्वंगरिस वेद' भी कहा जाता है।
    - यह मानव समाज में शांति और समृद्धि लाने पर केंद्रित है।
    - इसके दो प्रमुख संशोधन (शाखा) हैं:
      - पैपलाद
      - शौनकीय

## स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

